21 वीं सदी में भारतीय विदेश नीति के बदलते आयाम: परिवर्तन एवं चुनौतियां

***डॉ. कमलेश कुमार टांक**

सारांश

भारत की स्वतंत्रता से लेकर आज तक भारतीय विदेश नीति में अनेक परिवर्तन आए हैं। शीत युद्ध के दौरान भारत की विदेश नीति मुख्यतः आदर्शवाद और गुटनिरपेक्षता पर आधारित थी जो विकासशील देशों के मुद्दों पर केंद्रित थी। शीत युद्ध की समाप्ति के पश्चात विश्व राजनीति में नाटकीय परिवर्तन आए और भारत की विदेश नीति भी इन परिवर्तनों से गहरे रूप में प्रभावित हुई। अब भारत की विदेश नीति यथार्थवाद पर आधरित होकर राष्ट्रीय हितों पर बल देने के साथ विश्व की विभिन्न शक्तियों के साथ सहयोगपूर्ण संबंध पर आधारित हो गई है। 21 वीं सदी में भारत एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभरकर सामने आया है। प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय विदेश नीति का ऐतिहासिक विवेचन प्रस्तुत करते हुए वर्तमान में इसमें आए परिवर्तनों की व्याख्या करने के साथ-साथ इसकी भविष्य की चुनौतियों का भी वर्णन करने का प्रयास करता है। यह शोध पत्र मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।

कुंजी शब्द: विदेश नीति, भारत, शीत युद्ध, परिवर्तन, चुनौतियां

भारत की विदेश नीति ने धीरे-धीरे खुद को घरेलू प्रगतिशील प्राथमिकताओं में एकीकृत कर लिया है, जिसमें सामाजिक और आर्थिक विकास भी शामिल है। इसके अलावा, भारत की विदेश नीति को अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा सुरक्षा या सामूहिक निरस्त्रीकरण, समुद्री सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय संगठनों में सुधार जैसी वैश्विक चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है। जबकि हम घरेलू लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, हमें तेजी से बदलते वैश्विक मामलों के माहौल और भारत के हितों की रक्षा करने वाली सुरक्षा

*अतिथि व्याख्याता, राजनीति विज्ञान विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

और आर्थिक वास्तुकला के साथ बेहतर समन्वय भी सुनिश्चित करना चाहिए। आसपास की बेहद जटिल स्थिति को देखते हुए, भारत अपने आसपास के क्षेत्रों में राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक सुरक्षा बनाए रखने को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता मानता है। यह दृढ़ संकल्प पड़ोसी देशों के साथ उसके संबंधों को मजबूत करता है।

भारत की परिधीय नीति का फोकस उपमहाद्वीप को लाभ पहुंचाने और पड़ोसी देशों के साथ भारत की तीव्र आर्थिक वृद्धि को साझा करने के लिए पड़ोसी देशों के साथ इंटरैक्टिव नेटवर्क, व्यापार और निवेश को मजबूत करना है। भारत की विदेश नीति समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के लोकतांत्रिक सिद्धांतों पर आधारित है। विदेश नीति बनाने का उद्देश्य पड़ोसी देशों और दुनिया के अन्य देशों के साथ शांतिपूर्ण संबंध सुनिश्चित करना और अंतर्राष्ट्रीय मामलों में स्वायत्त निर्णय लेना सुनिश्चित करना है। भारतीय हमारी विदेश नीति के कुछ मूलभूत सिद्धांत हैं-

- सामाजिक-आर्थिक विकास एवं राजनीतिक स्थिरता जैसे राष्ट्रीय हितों को प्रोत्साहित करना।
- राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा करना।
- विभिन्न देशों के बीच शांति, मित्रता, सद्-इच्छा एवं सहयोग को बढ़ावा देना।
- साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद एवं निरंकुश शक्तियों का प्रतिरोध करना एवं अन्य देशों के आंतरिक मामलों में विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली देशों द्वारा हस्तक्षेप का विरोध करना।
- राष्ट्रों के बीच विवादों के शांतिपूर्ण समाधान को प्रोत्साहित करना।
- शस्त्रीकरण का विरोध करना एवं निःशस्त्रीकरण अभियान का समर्थन करना।
- मानवाधिकारों का सम्मान करना एवं जाति, प्रजाति, रंग, नस्ल, घर्म इत्यादि पर आधारित भेदभाव एवं असमानताओं का विरोध करना।
- पंचशील के गुटनिरपेक्ष सिद्धांतों को प्रोत्साहित करना।

भारतीय विदेश नीति के गत 75 वर्षों का सिंहावलोकन करें तो हम यह पाते हैं कि यह पूरी यात्रा इतनी आसान भी नहीं रही है। एक लंबी इस्लामी-ब्रिटिश परतंत्रता के बाद जब देश आजाद हुआ तो पूरी दुनिया ने इसके विफल होने की भविष्यवाणियां की थी।

भारत ने अपने दृढ़ संकल्प और संघर्ष से ऐसा मुकाम हासिल किया है और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य न होने के बावजूद आज दुनिया के सभी स्थायी और अस्थायी सदस्य भारत की स्थिति को समझने की कोशिश कर रहे हैं। वैश्विक स्तर पर, यदि हम पिछले 75 वर्षों में अपनी विदेश नीति पर नज़र डालें तो हम देखते हैं कि शेष विश्व द्वारा उत्पन्न की गई समस्याएँ वास्तव में भारत की मुख्य बाधाएँ नहीं हैं; लेकिन भारत ने स्वयं कई वैचारिक हठधर्मिताएं पैदा की हैं, जिन्होंने भारत को विश्व मंच पर अपनी महत्ता बढ़ाने से रोक दिया है।

हालाँकि शीत युद्ध की समाप्ति के पश्चात भारतीय विदेश नीति में अनेक परिवर्तन दृष्टगत हुए हैं और अब भारत की विदेश नीति आदर्शवाद के स्थान पर यथार्थवाद का अनुसरण कर रही है जिसके सकारात्मक परिणाम सामने आये हैं। भारत अब एक वैश्विक महाशक्ति के रूप में उभरकर सामने आया है।

भारत की विदेश नीति का पहला चरण 1947 में भारत की स्वतंत्रता के साथ शुरू हुआ और 1962 तक चला। इसे गुटनिरपेक्षता का युग माना जाता है और भारत को बड़ी दुनिया में जिस मुख्य चुनौती का सामना करना पड़ा, वह द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के शीत युद्ध के युग में दो महान शक्तियों के बीच अपनी संप्रभुता की रक्षा करने, अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और स्थापित करने की चुनौती थी। एक नेता के रूप में अपनी गरिमा की रक्षा करने और एशियाई और अफ्रीकी महाद्वीप के नव स्वतंत्र देशों के बीच एक नेता के रूप में अपनी योग्यता साबित करने के लिए चार जरूरी बिंदु थे। गुटनिरपेक्षता के इस आशावादी सिद्धांत का 1962 के भारत-चीन युद्ध के साथ ही निराशाजनक अंत हो गया।

भारत की विदेश नीति का दूसरा चरण 1962 से 1971 तक यथार्थवाद एवं सुधारों का काल कहा जा सकता है। 1964 में भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका ने एक महत्वपूर्ण रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किये। 1962 में चीनी आक्रमण ने भारतीय राजनीति को उन नीतियों की ओर स्थानांतरित कर दिया, जिनमें राष्ट्रीय सुरक्षा, राजनीतिक और आर्थिक संसाधनों पर विशेष जोर दिया गया। राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक कमजोरी के साथ भारत ने किसी तरह इस चरण को पार कर लिया।

उसके बाद तीसरा चरण शुरू हुआ, जो 1971 से 1991 तक 20 वर्षों तक चला। इस अवधि के दौरान भारत का प्रारंभिक ध्यान क्षेत्रीय संसाधनों के संरक्षण पर था। परन्तु इसकी शुरुआत पाकिस्तान के साथ 1971 के युद्ध और बांग्लादेश के निर्माण के साथ हुई लेकिन दुर्भाग्य से इसका अंत भी श्रीलंका में भारतीय शांति मिशन के अत्यंत दुखद अध्याय के साथ हुआ। इसी अवधि के दौरान चीन, पाकिस्तान और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच गठबंधन ने पूरे दक्षिण एशियाई क्षेत्र की स्थिरता को गहरे रूप में प्रभावित किया और भारत की संप्रभुता को भी खतरा पैदा हो गया। ऐसी स्थिति में भारत को सोवियत संघ का समर्थन प्राप्त करके करके इस समस्या का कूटनीतिक समाधान करना पड़ा।

लेकिन तत्कालीन सोवियत संघ के नाटकीय पतन और वर्ष 1991 में उभरे गंभीर आर्थिक संकट के साथ यह तीसरा चरण समाप्त हो गया और भारत को अपनी विदेशी नीति और घरेलू नीतियों पर गंभीरता से विचार करने और सार्थक सुधार करने की आवश्यकता महसूस हुई। भारत की विदेश नीति का चौथा चरण 1991 से 1999 तक चला जिसमें भारत को रणनीतिक और विदेश नीति के अतिरिक्त आर्थिक नीति को भी अपने एजेंडे में शामिल करना पड़ा।

यह पूर्ण एकध्रुवीयता या अमेरिकी नेतृत्व के प्रभुत्व वाले शीत युद्ध की समाप्ति के बाद का काल था। इन बदलती परिस्थितियों के परिणामस्वरूप भारत ने न केवल अपनी विदेश नीति में बदलाव किया बल्कि इसमें क्रांतिकारी परिवर्तन भी किये। इस अवधि के दौरान भारत ने तेजी से खुद को आर्थिक और राजनयिक क्षेत्रों में मजबूती के साथ स्थापित किया। इसी क्रम में, संयुक्त राज्य अमेरिका और इज़राइल के साथ भारत के राजनयिक संबंधों में तेजी से सुधार हुआ। संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ संबंध सुधारने के प्रयास में, भारत ने वर्ष1998 में अपना दूसरा परमाणु परीक्षण किया। संयुक्त राज्य अमेरिका की इच्छा के विरुद्ध भारत में परमाणु परीक्षण करने का आत्मविश्वास देश की तीव्र आर्थिक वृद्धि के कारण था। पिछले कुछ वर्षों में भारत की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है और परमाणु परीक्षणों तथा कारगिल युद्ध में पाकिस्तान की पराजय के कारण वैश्विक स्तर पर भारत का महत्व बढ़ा है। इस प्रकार अपनी विदेश नीति में बदलाव का लाभ भारत के व्यवहार में स्पष्ट हो गया है।

इसके बाद भारतीय विदेश नीति का पांचवां चरण 2000 से 2013 तक 13 वर्षों की अवधि तक चला। इस अवधि के दौरान भारत, चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच शक्ति संतुलन में एक बहुत महत्वपूर्ण खिलाड़ी बन गया। इस दौरान वैश्विक स्तर पर भारत का प्रभाव तेजी से बढ़ा। एक ओर, भारत ने 2005 के भारत-अमेरिका नागरिक परमाणु समझौते के माध्यम से संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ अपने संबंधों में सुधार किया है, वहीं दूसरी ओर, इसने व्यापार और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर रूस और चीन के साथ महत्वपूर्ण साझेदारी स्थापित की। यह भारत के लिए महान अवसर का समय है, जिसका वैश्विक प्रभाव निरंतर बढ़ रहा है।

भारतीय विदेश नीति के संदर्भ में पहला बिंदु यथार्थवाद है। हालांकि कुछ तथ्यों ने साबित कर दिया है कि 1972 में पाकिस्तान को हराने के बाद भारत द्वारा शिमला समझौते पर हस्ताक्षर करने के बावजूद पाकिस्तान ने भारत के प्रति अपनी नीतियों में सुधार नहीं किया जिससे दोनों देशों के बीच स्थिति उसी तरह बनी रही जैसी पूर्व में थी। समय बीतने के साथ पाकिस्तान भारत का अधिक संवेदनशील पड़ोसी बन गया जिससे कश्मीर विवाद और भी अधिक विवादास्पद हो गया। भारत की वर्तमान विदेश नीति पूरी तरह से यथार्थवादी है जिसका उदाहरण भारत द्वारा यूक्रेन संकट के दौरान रूस के साथ कच्चे तेल की खरीद जैसे महत्वपूर्ण फैसलों में देख सकते हैं।

भारत की वर्तमान विदेश नीति का दूसरा महत्वपूर्ण केंद्र इसकी आर्थिक कूटनीति है। यदि हम 1945 की अवधि को देखें, तो संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, जापान और सोवियत संघ जैसी दुनिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं ने अपने देशों को विकसित करने के लिए वैश्विक परिदृश्यों का उपयोग किया। यद्यपि भारत ने उस अवधि का लाभ नहीं उठाया। वर्तमान में भारत की विदेश नीति आर्थिक हितों से सर्वाधिक प्रभावित है। भारत ने अपने संरक्षणवादी बाजार और संकीर्ण आयात प्रणाली को त्यागकर समावेशी वैश्वीकरण की नीति अपनाई।

भारत की नई विदेश नीति का तीसरा महत्वपूर्ण बिंदु वैश्विक बहुध्रुवीयता को स्वीकार करना है। उसका मानना है कि दुनिया में कई महत्वपूर्ण देश हैं, सिर्फ़ एक या दो नहीं। भारत की विदेश नीति इसलिए सफल रही है क्योंकि यह अलग-अलग देशों के विभिन्न

समूहों के साथ अच्छे संबंध रखने में सक्षम रही है, भले ही वे हमेशा भारत के साथ न हों। उदाहरणार्थ एससीओ एवं क्वाड, रिक, ब्रिक्स, ईरान एवं सऊदी अरब, इजराइल एवं फिलिस्तीन।

भारतीय विदेश नीति का चौथा महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि भारत ने वैश्विक स्तर पर मज़बूत और ज़्यादा प्रभावशाली बनने के लिए अपनी विदेश नीति में ज़्यादा जोखिम उठा रहा है ताकि वैश्विक अवसरों का अधिक से अधिक लाभ लिया जा सके। भारतीय विदेश नीति का पाँचवाँ और अंतिम बिंदु यह है कि भारत को वैश्विक परिस्थितियों के अनुरूप विवेकपूर्ण निर्णय लेने चाहिए। अच्छे निर्णय लेने के लिए यह समझना ज़रूरी है कि दूसरे देश क्या कर रहे हैं और भविष्य में क्या हो सकता है। अतीत में की गई गलतियाँ, जैसे दूसरे देशों के बीच संबंधों को न समझना, यह दिखाती हैं कि भारत को वैश्विक मुद्दों के बारे में ज़्यादा जागरूक और सतर्क होने की ज़रूरत है।

वैश्विक संदर्भ में प्रभावपूर्ण विदेश नीति उसे माना जाता है जिसमें संभावनाओं, प्रतिस्पर्धाओं, जोखिमों एवं प्रतिफल की वैश्विक स्तर पर अच्छी समझ कायम हो। किसी देश द्वारा स्थानीय स्तर पर किसी विदेश नीति का अनुसरण करना अधिक आसान होता है; परंतु वैश्विक समझ और परिस्थितियों को नजरअंदाज करके बनाई गई विदेश नीति उस देश के लिए गंभीर खतरा पैदा कर सकती है। उदाहरणार्थ भारत द्वारा कश्मीर समस्या को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाना, शीत युद्ध के दौरान चीन एवं रूस के बीच के मतभेदों को सही समय पर भांपने में गलती करना, अक्साई चीन एवं अरुणाचल के मुद्दों पर चीन के नापाक इरादों को ना समझ पाना, शीत युद्ध के दौरान अमेरिका एवं चीन के लिए पाकिस्तान की जरूरत को अधिक गंभीरता से न लेना आदि भारतीय विदेश नीति की वैश्विक असफलता को दर्शाता है जिसके बाद में गंभीर परिणाम हुए।

21 वीं सदी में बदलती भारतीय विदेश नीति:

21 वीं सदी में वैश्विक स्तर पर अनेक परिवर्तन आ रहे हैं और विभिन्न देशों की विदेश नीतियों में भी अनेक बदलाव देखने को मिल रहे हैं। उदाहरणार्थ अमेरिका जैसे देश दूसरे देशों के साथ मिलकर काम करने के बजाय अपने राष्ट्रीय हितों पर ज़्यादा ध्यान दे रहे हैं। चीन ज़्यादा शक्तिशाली होता जा रहा है और ब्रिटेन के ब्रेक्जिट से अलग होने

के कारण यूरोपीय संघ को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। आधुनिक तकनीकी उन्नति की वजह से विभिन्न देशों के एक-दूसरे के साथ व्यापार करने और आपसी संवाद करने का तरीका भी बदल रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ और विश्व व्यापार संगठन पहले जितने महत्वपूर्ण नहीं रहे हैं। भारत जैसे देशों के लिए इन सभी बदलावों के साथ तालमेल बिठाना और यह सुनिश्चित करना मुश्किल हो सकता है कि वे अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए अपनी विदेश नीति में सही फ़ैसले ले। इस तेज़ी से बदलती दुनिया में कूटनीति में तुरंत फ़ैसला लेना बहुत आवश्यक है और भारत को भी इसी दिशा में आगे बढ़ना चाहिए ताकि भारतीय विदेश नीति भी बदली वैश्विक परिस्थितियों के साथ अपना सामंजस्य बिठा सके।

भारत की वर्तमान विदेश नीति उच्च स्तर की क्षमताओं, महत्वकांक्षाओं और जवाबदेही की भावनाओं के साथ वैश्विक स्तर पर अपना प्रभाव जमा चुकी है। भारत ने गुटनिरपेक्षता जैसी अप्रासंगिक नीतियों को पीछे छोड़कर विश्व स्तर पर बड़ी और मध्यम शक्तियों के साथ अपनी साझेदारी मजबूत कर रहा है। वर्तमान भारत की विदेश नीति शक्तिशाली राष्ट्रों के साथ सामंजस्य और सहयोग स्थापित करके उनके साथ द्विपक्षीय संबंधों को मजबूती प्रदान कर रही है। भारत ने ब्रिक्स, क्वाड जैसे क्षेत्रीय संगठनों में अपनी सक्रीय भागीदारी के माध्यम से विश्व कल्याण की नीतियों को आगे बढ़ाने का कार्य किया है जो वर्तमान में भी प्रासंगिक है।

भारत की वर्तमान विदेश नीति ने प्रवासी भारतीयों की सुरक्षा और संरक्षण को अपनी विदेश नीति में महत्वपूर्ण स्थान दिया है जो कि प्रशंसनीय है। अफ़ग़ानिस्तान और यूक्रेन जैसे संकटग्रस्त देशों से अपने नागरिकों को सुरक्षित स्वदेश लाना भारत की बदलती विदेश नीति का एक अहम उदाहरण है।

भारत ने अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को कायम रखते हुए रूस और पश्चिमी देशों के साथ उचित समन्वय और सामंजस्य स्थापित करते हुए अपने राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देते हुए यह दिखाया है कि भारत के लिए अब उसके राष्ट्रीय हित ही महत्वपूर्ण हैं।

भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति से अब तक वैश्विक परिदृश्य में अनेक बदलाव आए हैं। इसी के फलस्वरूप भारत ने अपनी विदेश नीति को अधिक लचीला और अनुकूलशील बनाने का प्रयास किया है ताकि इसे नयी विश्व व्यवस्था के साथ समायोजित किया जा सके। भारत ने अपने पड़ौसी देशों के साथ भी शांतिपूर्ण वातावरण बनाने के लिए प्रयासरत है ताकि क्षेत्रीय वातावरण स्थिर बना रहे। भारतीय विदेश नीति में जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा और खाद्य सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे शामिल हैं और इनके न्यायपूर्ण और उचित समाधान के लिए वैश्विक सहयोग जरूरी है।

भारतीय विदेश नीति के समक्ष चुनौतियां:

किसी भी देश की विदेश नीति के बारे में माना जाता है कि यह लगभग स्थायी होती है क्योंकि इसका स्वरूप राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखकर ही तय किया जाता है। यह भी माना जाता है कि सरकारें बदलने के साथ विदेश नीति प्रायः नहीं बदलती, लेकिन वैश्विक भू-राजनीतिक परिस्थितियों तथा आंतरिक राजनीति में परिवर्तन होने के कारण विदेश नीतियों में आंशिक परिवर्तन की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। यही बात भारतीय विदेश नीति पर भी लागू होती है। वर्तमान में भारतीय विदेश नीति भी अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है जो निम्न प्रकार है:-

भारतीय विदेश नीति के समक्ष चुनौती उसके अपने पड़ौसी देशों से है अतः भारत को अपने पड़ौस को ध्यान में रखकर अपनी नीतियां बनानी पड़ती है। इसमें क्षेत्रीय अस्थिरता एक महत्वपूर्ण कारक है। पाकिस्तान को एक असफल देश माना जाता है और नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता भारत के लिए एक बड़ी समस्या है। म्यांमार, बांग्लादेश और श्रीलंका के साथ भारत के संबंध हमेशा से ही वहां पर सरकारों में परिवर्तन के कारण अनियमित रहे है। भारत को चीन को दादागिरी को नकारना पड़ता है जिसे वह सहन करने के लिर मजबूर है। सार्क देशों में भूटान ही एकमात्र ऐसा देश है जिसके साथ भारत के संबंध अच्छे हैं अतः भारत को अपने पड़ौसी देशों के साथ समंजस्यपूर्ण संबंध बनाए रखने की जरूरत है।

भारतीय विदेश नीति को चीन के साथ राजनीतिक संबंधों की दिशा परिभाषित करने में बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। चीन के विस्तारवादी और आक्रामक रवैये

ने वैश्विक समुदाय को चिंता में डाल रखा है। चीन पूर्वी चीन सागर और दक्षिण चीन सागर को अपना प्राथमिक प्रभाव क्षेत्र मानता है। वहीं, चीन भारत के साथ सीमा विवाद में भी उलझा हुआ है जिससे दोनों देश रिश्ते सामान्य नहीं कर पा रहे हैं। वर्ष 1962 में दोनों देशों के बीच सीधा युद्ध भी छिड़ गया था इसलिए चीन की रणनीतिक चालों से सही तरीके से कैसे निपटा जाए यह भारतीय विदेश नीति के सामने एक अहम चुनौती है।

पूर्व सोवियत संघ का उत्तराधिकारी रूस हमारा पुराना और विश्वसनीय मित्र देश है और उसने इस मित्रता का विधिवत प्रदर्शन भी किया है। कुछ समय पहले तक भारत का मानना था कि रूस के लिए चीन और पाकिस्तान के करीब जाना आसान नहीं होगा। लेकिन पिछले कुछ समय से जैसे-जैसे भारत संयुक्त राज्य अमेरिका के करीब आ रहा है, रूस अपने पड़ोसियों पाकिस्तान और चीन के साथ अपने राजनीतिक संबंधों को बढ़ावा दे रहा है। यह भारत के लिए चुनौती ही नहीं बल्कि गंभीर चिंता का विषय भी है। चीन मौका मिलने पर रूस जैसे भारत के पारंपरिक सहयोगियों के साथ संबंधों को मजबूत करने के लिए कड़ी मेहनत करता रहता है। दोनों देशों के बीच तनातनी के बाद यह साफ हो गया है कि भारत-रूस रिश्ते सिर्फ भावनाओं के आधार पर विकसित नहीं हो सकते। लेकिन रूस के साथ हमारे आर्थिक, रणनीतिक और रक्षा संबंध बहुत मजबूत हैं और भारत इसकेलिए सबसे बड़े बाजारों में से एक बना हुआ है। लेकिन हमें रूस के साथ संबंधों को बहाल करने के अपने प्रयासों को नवीनीकृत करना चाहिए और राजनयिक रुख के बजाय सीधे रूसी नेतृत्व से बात करके इस मुद्दे का उचित समाधान भी करना चाहिए।

वैश्विक मंचों पर भारत की बढ़ती स्वीकार्यता उसे महाशक्ति कहलाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। इसके अलावा, ऑस्ट्रेलिया को समान क्षेत्रीय उद्देश्यों वाले समूह में शामिल करके भारत-अमेरिका-जापान त्रिपक्षीय वार्ता को और मजबूत किया जाना चाहिए। इसके अलावा, कुछ घरेलू चुनौतियाँ भी हैं; अगर हम इन चुनौतियों से पार नहीं पा सके तो हमारे लिए विश्व महाशक्ति का दर्जा हासिल करना आसान नहीं होगा। ऐसी परिस्थितियों में, यदि भारत संयुक्त राज्य अमेरिका और उसके सहयोग पर अत्यधिक निर्भरता के कारण वैश्विक मंच पर महाशक्ति कहलाने के भ्रम में नहीं पड़ता है, तो

उसे अपनी घरेलू कमजोरियों को दूर करना होगा, जो भारत की राह में बड़ी बाधा बन सकती हैं।

आर्थिक उदारीकरण के लगभग 25 वर्षों के बाद भी देश के आर्थिक विकास का लाभ अभी तक समाज के सभी वर्गों को पूरी तरह नहीं मिल पाया है, जो तीव्र आर्थिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। भारत अभी भी स्वास्थ्य, शिक्षा और सुरक्षा जैसे बुनियादी सामाजिक परिणाम हासिल करने के लिए संघर्ष कर रहा है।

इन सभी परिणामों का समावेश नागरिकों के समग्र विकास और अच्छे जीवन के लिए आवश्यक सभी बुनियादी जरूरतों की पूर्ति के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। पिछले कुछ समय से भारत की आर्थिक वृद्धि में गिरावट का कारण वैश्विक आर्थिक संकट को माना जाता रहा है, लेकिन देश की विकास दर को बरकरार न रख पाने का एक महत्वपूर्ण कारण प्रतिभा और कुशल श्रम का समुचित उपयोग न हो पाना भी है। कोई भी देश अपनी विकास दर तभी कायम रख सकता है, जब उसका प्रदर्शन उसके बुनियादी उद्योगों के सभी मापदंडों पर एक समान बना रहे जो कि भारत में दिखाई नहीं देता है अतः इसमें भी सुधार की आवश्यकता है।

भारत वर्तमान में दुनिया में हथियारों का सबसे बड़ा आयातक देश है और हथियारों के मामले में आत्मनिर्भर हुए बिना कोई भी देश खुद को वैश्विक महाशक्ति नहीं कह सकता है। अब यह भी स्पष्ट हो गया है कि कोई भी महाशक्ति अपनी हथियार तकनीक किसी अन्य देश के साथ साझा नहीं करती है। रक्षा अर्थशास्त्र का एक बुनियादी नियम यह है कि कोई भी हथियार या रक्षा उत्पाद खरीदने की तुलना में उसे बनाना अधिक महंगा है इसलिए बेहतर है कि इस हथियार को केवल अपने देश में ही विकसित किया जाए और फिर अंतरराष्ट्रीय बाजार में पेश किया जाए। देश की नई रक्षा नीति सेना, रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन, सार्वजनिक सुरक्षा क्षेत्र/सार्वजनिक रक्षा एजेंसियों और निजी कंपनियों के बीच आपसी सहयोग और समन्वय के माध्यम से रक्षा अनुसंधान और विकास प्रयासों को बढ़ावा देती है। लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। ऐसे में अगर भारत को आत्मनिर्भरता हासिल करनी है तो रक्षा क्षेत्र में डिजाइन क्षमताएं और उत्पादन क्षमताएं हासिल करना बहुत जरूरी है।

निष्कर्ष:

पिछले कुछ वर्षों में भारतीय विदेश नीति में अनेक बदलाव और परिवर्तन दृष्टिगत हुए हैं जिसने इस देश की विदेश नीति को भी प्रभावित किया है। भारत की विदेश नीति में सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह अपने पड़ोसियों, आसियान और पश्चिम एशिया सहित अन्य देशों के साथ कैसे सहयोग करेगा. विश्व की सबसे बड़ी शक्तियों के साथ अपने संबंधों को बढ़ाना भी एक चुनौती है। चीन ने अपनी वित्तीय, सैन्य और भारी निवेशों के माध्यम से भारत के पड़ोस में अपना प्रभाव मज़बूत किया है, जो हमारे वैश्विक महाशक्ति बनने और हमारी विदेश नीति के लक्ष्यों की राह में बाधक बन सकता है। लेकिन भारत वर्तमान में, अपने बड़े भौगोलिक क्षेत्र, आर्थिक और सैन्य बल, मानव संसाधन और रणनीतिक लाभ के चलते अंतरराष्ट्रीय पटल पर चीन के विरोध के बावजूद ऐसी स्थिति में आ गया है, जहाँ उसे वैश्विक ताकत स्वीकार करने की औपचारिकता मात्र रह गई है। इस प्रकार भारत ने 21 वीं सदी में वैश्विक परिस्थितियों के अनुकूल अपनी विदेश नीति में परिवर्तन करने का प्रयास किया है और वैश्विक पटल पर एक महाशक्ति बनकर उभरा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. Pant, Harsh V., ed. *New Directions in India's Foreign Policy: Theory and Praxis*. Cambridge: Cambridge University Press, 2019.
2. Pant, Harsh V. *Indian Foreign Policy: The Modi Era*. New Delhi: Har Anand Publication, 2019.
3. Pant, Harsh V. *India's Foreign Policy: An Overview*. New Delhi: Orient Blackswan, 2018.
4. Menon, Shivshankar. *Choices: Inside the Making of India's Foreign Policy*. New Delhi: Penguin, 2018.
5. दीक्षित, जे. एन. भारतीय विदेश नीति. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन, 2018.
6. सीकरी, राजीव. भारत की विदेश नीति: चुनौती और रणनीति. दिल्ली: सेज भाषा, 2017.
7. Pande, Aparna. *From Chanakya to Modi: Evolution of India's Foreign Policy,* New Delhi: Harper Collins, 2017.
8. Dubey, Muchkund. *India's Foreign Policy: Coping with the Changing World*. New Delhi: Orient Blackswan, 2017.

9. Ganguly, Anirban. *The Modi Doctrine: New Paradigms in India's Foreign Policy*. Delhi: Wisdom Tree Publishers, 2016.
10. Ganguly, Sumit. *Engaging the World: India's Foreign Policy since 1947*. New Delhi: Oxford University Press, 2015.
11. Ganguly, Sumit. *Indian Foreign Policy*, New Delhi: Oxford University Press, 2015.
12. Bajpai, Kanti P. and Harsh V. Pant, ed. *India's Foreign Policy: A Reader*. New Delhi: Oxford University Press, 2013.
13. दत्त, वी. पी. स्वतंत्र भारत की विदेश नीति. दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट, 2010.
14. दीक्षित, जे. एन. भारत की विदेश नीति और इनके पड़ौसी. दिल्ली: ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, 2005.